



प्रतिभा पलायन - भारतीय समाज पर सामाजिक-आर्थिक असर

Brain Drain : Socio-Economic Impact on Indian Society

Dr. Hasmukh Panchal

Assistant Professor – Sociology,

Department of Sociology & Social Anthropology,

Gujarat Vidyapith, RANDHEJA-382620, Email- hasmukhp13@gmail.com

Abstract -

प्रतीभा पलायन शब्द से तात्पर्य है किसी देश से बुद्धिजीवी वर्ग जैसे डॉक्टर्स, अथवा किसी वर्ग की विशेष प्रतिभाओं का अन्य देश में बेहतर सुविधा मिलने के कारण प्रस्थान कर जाने से हैं। प्रतीभा पलायन का अर्थ मानव पूंजी रूपी संसाधनो का आंतरराष्ट्रीय हस्तांतरण हैं, जो अपेक्षाकृत उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियोंका विकासशील देशों से विकसित देशों में प्रवास हैं। भारतीय डायस्पोरा, विश्व में विशिष्ट समुदाय और गतिशील डायस्पोरा हैं। जो 120 से अधिक देशो में फैले हुए हैं। 30 मिलियन भारतीय डायस्पोरा विकसित देशो में मानव संसाधनो के रूप में काम करते हैं। भारतीय इंजीनियरों व वैज्ञानिकों का यु.एस. में प्रवास, अंतिम 10 वर्षों में करीब 85 प्रतिशत बढ़ा हैं, ऐसा यु.एस की उच्च वैज्ञानिक समिति का दावा हैं। हम लोग मूल्यवान रुपयों से मूल्यवान मानव पूंजी उत्पादन करते हैं, वह रुपयें कर दाताओ से जमा होता हैं। किन्तु ट्रेजेडी यह हैं कि हम लोग हमारे कुशल मानव संसाधन को विकसित देशों के विकास के लिए भेज देते हैं। उन्नत अर्थव्यवस्था के लिए मानव पूंजी आपूर्ति में भारत का नाम अग्रेसर हैं। अन्य महत्वपूर्ण मूल देशों के सामने भारत सबसे अधिक संख्या में बुद्धिजीवीओ की आपूर्ति करता हैं। भारत में प्रतीभा पलायन वर्तमान सामाजिक-आर्थिक समस्या हैं।

शब्द कुंजी - प्रतीभा पलायन, मानव पूंजी, मानव संसाधन, भारतीय समाज

List of Abbreviations -

EU - European Union,

UNDP - United Nations Development Programme

OECD -Organization for Economic Co-operation and Development

1. प्रस्तावना -

प्रतिभा किसी एक ही देश की परिरक्षित निधि नहीं है । प्रत्येक देश के अपने-अपने क्षेत्र के प्रवीण व्यक्ति होते हैं, जैसे वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ, साहित्य अथवा कलाओं के विद्वान, चित्रकार, कलाकार आदि । मुक्त असाधारण प्रतिभा सम्पन्न ऐसे पुरुष और स्त्रियाँ अपने देश की प्रगति और समृद्धि में योगदान तो देते ही हैं परन्तु अपनी विशिष्टता वाले क्षेत्र में भी उत्कर्षता लाते हैं । यह कोई असामान्य बात नहीं है कि इन योग्य व्यक्तियों में से कुछ लोगों को अपने ही देश में कोई सन्तोषजनक काम नहीं मिल

पाता या किसी न किसी कारण से वे अपने वातावरण से तालमेल नहीं बिठा पाते । ऐसी परिस्थितियों में ये लोग बेहतर काम की खोज के लिए अथवा अधिक भौतिक सुविधाओं के लिए दूसरे देशों में चले जाते हैं । इस निर्गमन अथवा प्रवास को हाल के वर्षों में "प्रतिभा पलायन" की संज्ञा दी गई है । अपने कुशल और प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियों की हानि से विकासशील देश सब से अधिक प्रभावित हुए हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि विकासशील देशों में वेतन और अन्य सुविधाओं के रूप में प्राप्त होने वाले लाभ कम हैं । वैश्विक रूप से 20 बड़े देश हैं जिनके 49 प्रतिशत जनसंख्या वैश्विक प्रवासी हैं ,जिसमें 34 प्रतिशत जनसंख्या 10 मूल देश के हैं। मेक्सिको की तरह भारत की बड़ी मात्रा में जनसंख्या सरहद पार (डायस्पोरा) रहते हैं। भारत में सन 2000 में 8.0 मिलियन थे किन्तु 2017 में 16.6 मिलियन जनसंख्या अन्य देशों में रहते हैं।(IMR-2017)

प्रतीभा पलायन शब्द से तात्पर्य है किसी देश से बुद्धितजीवी वर्ग जैसे डॉक्टर्स, अथवा किसी वर्ग की विशेष प्रतिभाओं का अन्य देश में बेहतर सुविधा मिलने के कारण प्रस्थान कर जाने से हैं। According to Oxford Advanced Learner's dictionary Brain Drain is "The movement of highly skilled and qualified people to a country where they can work in better conditions and earn more money". प्रतीभा पलायन का अर्थ मानव पूंजी रूपी संसाधनों का आंतरराष्ट्रीय हस्तांतरण है, जो अपेक्षाकृत उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों का विकासशील देशों से विकसित देशों में प्रवास है। प्रतीभा पलायन को "मानव पूंजी उडान" के नाम से भी जानते हैं क्योंकि यह पूंजीगत उडान जैसा है, जिसमें वित्तीय पूंजी का व्यापक प्रवास शामिल है। आम तौर पर ब्रेन-ड्रैन एक आर्थिक लागत के रूप में माना जाता है, क्योंकि प्रवासियों सरकार या अन्य संगठनों द्वारा प्रायोजित उनके प्रशिक्षण के मूल्य के अंश लेते हैं। यह पूंजीगत उडान के समानांतर है, जो वित्तीय पूंजी के समान गमनागमन को संदर्भित करता है। ब्रेन-ड्रैन अक्सर अपने देश के गंतव्य में प्रवासियों के डी-स्किलिंग के साथ जुड़ा हुआ है, जबकि उनके उत्प्रवास देश में कुशल व्यक्तियों के पलायन का अनुभव होता है।

ब्रेन-ड्रैन में विभिन्न वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और टेक्नोलोजिस्ट जो विकासशील देशों से अमेरिका, यूके, इंग्लैंड, जर्मन आदि जैसे अन्य विकसित देशों में उत्प्रवास होते हैं। अब यह ब्रेन-ड्रैन की घटनाएँ Converse Effect बनती है, जैसे की जिस देश में आबादी हो रही है उस विशेष देश के लिए मस्तिष्क लाभ बनती हैं। आम तौर पर भारत सहित सभी विकासशील देशों ये ब्रेन-ड्रैन से पीड़ित हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित देशों ने इस घटना से मस्तिष्क लाभ उठाया है। कम या अधिक, सभी पिछड़े देश इस समस्या से पीड़ित हैं। भारत दुनिया के ऐसे प्रमुख देशों में से एक है, जो वर्तमान समय में इस ब्रेन-ड्रैन समस्या से ग्रस्त है।

यूएनडीपी का अनुमान है कि कम्प्यूटर विशेषज्ञों के यु.एस. उत्प्रवास से भारत को 2 अरब डॉलर का नुकसान आता है। अपने उच्च अध्ययन के लिए विदेश जाने वाले भारतीय छात्र, भारत की 10 बिलियन अमरीकी डॉलर की विदेशी मुद्रा का एक्सचेंज कराते हैं। हजारों भारतीय वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और अन्य योग्य व्यक्तियों ने माइग्रेट किया है और वे अन्य देशों में रह रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हमारे अच्छे दिमागवाले युवा भारत छोड़ने के लिए

प्रयास करते हैं। पासपोर्ट की मांग प्रत्येक साल बढ़ रही है, भले ही भारत में अधिक से अधिक रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। हमारे राष्ट्र की प्रतिभा का निरंतर बढ़ता प्रवाह, भारत सरकार की चिंता का कारण बना है क्योंकि वह शिक्षित और करदाता हैं। उच्च वेतन और सुविधाओं के कारण भारतीय युवा विदेश में जा रहे हैं। विकसित देशों के विकासका एक कारण अल्प विकसित देशों के उच्च बौद्धिक प्रवासियों भी हैं। यह “ज्ञान अंतर Knowledge Gap” बढ़ रहा है और गरीब देश गरीब होते जा रहे हैं और अमीर देशों ज्ञान देशों के रूप में उभर रहे हैं एवं वे दुनिया पर शासन कर रहे हैं। एक अन्य तरीके से वैश्वीकरण ने देश के अंदर कुशल लोगों को बनाए रखने में मदद की है क्योंकि एक व्यक्ति भारत में घर पर बैठे विदेशी कंपनी के लिए काम कर सकता है। लेकिन वास्तव में वह अपने देश में ही, एक विदेशी देश के लिए काम कर रहा है।

भारतीय डायस्पोरा, विश्व में विशिष्ट समुदाय और गतिशील डायस्पोरा हैं। जो 120 से अधिक देशों में फैले हुए हैं। भारतीय डायस्पोरा की सेटलमेन्ट प्रकृति के आधार पर उसे दो भागों में, पुराने डायस्पोरा और नया डायस्पोरा में विभाजित किया जा सकता है। भारतीय पुराने डायस्पोरा में शामिल प्रमुख देश फिजी, मलेशिया, मोरीशस, त्रिनिडाड और टोबैगो, गुयाना और सूरीनाम, और नए डायस्पोरा में सभी विकसित देशों संयुक्त राज्य अमरिका, ब्रिटन, कनाडा, न्युजीलैंड और ओस्ट्रेलिया हैं। इन दोनों के अलावा भारतीयों की एक अच्छी संख्या भी खाड़ी क्षेत्र में रहते हैं। भारतीय प्रवासी गंतव्य देशों के भौगोलिक वितरण को योग्यता के स्तर से परिभाषित किया गया है। उच्च कुशल लोगों के प्रवास का प्रवाह पारंपारिक भारतीय स्थलों जैसे अमेरिका, ब्रिटन, कनाडा और हाल ही में गैर-अंग्रेजी बोलने वाले ड्यु देशों की ओर उन्मुख हैं। अमरिका में 1700000, ब्रिटन में 120000, सउदी अरेबिया में 1500000, न्युज़िलैन्ड में 25000, ईराक में 110 भारतीय डायस्पोरा बसे हुए हैं। 30 मिलियन भारतीय डायस्पोरा विकसित देशों में मानव संसाधनों के रूप में काम करते हैं। इस लहर में विश्व अर्थव्यवस्था से भारतीय अर्थव्यवस्था को जोड़ा गया था। अर्ध-कुशल और अकुशल भारतीय कामदार मुख्य रूप से खाड़ी सहयोग परिषद के उच्च आय वाले देशों में केन्द्रित हैं। इन प्रवासियों को भी लंबे समय तक प्रेषित करने के प्रमुख प्रदाताओं के रूप में देखा गया है। भारत के मौजूदा प्रवासियों ने भारतीय श्रम उत्प्रवासन का विकास दिखाया, जो कि खाड़ी की ओर अत्यधिक कुशल प्रवाह की उपस्थिति से पुष्टि की गई है। वह पारंपारिक रूप से अर्ध-कुशल और अकुशल भारतीयों के लिए आरक्षित गंतव्य हैं। अमरिका, ब्रिटन, कनाडा, न्युजीलैंड, ओस्ट्रेलिया और यूरोप की ओर उच्च कुशल प्रवाह के बारे में इसी प्रवृत्ति को दर्ज किया गया है जहां अकुशल भारतीय प्रवासियों को अधिक योग्य श्रेणियों के साथ मिलाया जाता है। भारतीय इंजीनियरों व वैज्ञानिकों का यु.एस. में प्रवास, अंतिम 10 वर्षों में करीब 85 प्रतिशत बढ़ा है, ऐसा यु.एस की उच्च वैज्ञानिक समिति का दावा है। हम लोग मूल्यवान रूपों से मूल्यवान मानव पूंजी उत्पादन करते हैं, वह रूपों को दाताओं से जमा होता है। किन्तु ट्रेजेडी यह है कि हम लोग हमारे कुशल मानव संसाधन को विकसित देशों के विकास के लिए भेज देते हैं। उन्नत अर्थव्यवस्था के लिए मानव पूंजी आपूर्ति में भारत का नाम अग्रसर है। अन्य महत्वपूर्ण मूल देशों के सामने भारत सबसे अधिक संख्या में बद्धिजीवीओं की आपूर्ति करता है। भारत में प्रतिभा पलायन वर्तमान सामाजिक-आर्थिक

समस्या हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में प्रतीभा पलायन के सामाजिक-आर्थिक पहलु पर ध्यान किया है।

- उद्देश्य -
1. प्रतीभा पलायन की समस्याको जानना ।
 2. प्रतीभा पलायन की समस्याके कारणों को जानना ।
 3. प्रतीभा पलायन के सामाजिक-आर्थिक पहलु को समजना ।

2. शोध प्रविधि -

ऐतिहासिक पद्धति के जरीए सेकन्डरी डाटा का उपयोग करके अध्ययन करने कि कोशिश कि है। अध्ययन का आधार राष्ट्रिय, आंतरराष्ट्रिय रिपोर्ट में दिये गए आंकडो का उपयोग है। सेन्सस, अखबार, पुस्तकें आदि सेकन्डरी स्रोत के आधार है। अध्ययन का प्रथम विभाग में विषयवस्तु, दुसरे विभाग में शोध प्रविधि, तीसरे विभाग में वर्गीकरण एवं विश्लेषण और चौथे विभाग में निष्कर्ष निरूपण किया है।

3.1 भारत में प्रतीभा पलायन की समस्या -

विकासशील और गरीब देशों के लिए, कई क्षेत्रों में प्रशिक्षित विशेषज्ञों के तहत प्रतीभा पलायन एक सीधा नुकसान हैं। दूसरी ओर उन्नत देशों के लिए शुद्ध लाभ है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के मुताबिक, प्रत्येक वर्ष पिछड़े देशो से हजारो विशेषज्ञ अमेरिका, कनाडा, ब्रिटन, जर्मनी आदि उन्नत देशों में पलायन कर रहे हैं। इन विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के तहत विकासशील देशों ने मिलियन रूपये खर्च किए हैं। लेकिन उन्नत देश उनके प्रशिक्षण पर एक भी रूपये का खर्च किए बिना उनकी सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हजारों उच्च प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और अन्य बुद्धिजीवियों ने भारत छोड़ दिया और विदेशों में जाकर निवास किया। वे आम तौर पर यू.एस.ए. , यू.के. , कनाडा, जर्मनी आदि में उच्चतर शोध के लिए मौद्रिक लाभ और सुविधाओं की प्राप्ति के लिए जाते हैं। प्रतीभा पलायन के कारण भारत को नुकसान है और अमेरिका को फायदा है।

2010 में अनुमानित 11.4 मिलियन प्रवासियों के साथ भारत दुनिया में दूसरा उत्प्रवासन देश था, प्रथम नंबर पर मेक्सिको (11.9 मिलियन) था। पूर्ण रूप से भारत, उन देशों में से है, जो विदेशी बाजारों में सबसे ज्यादा कुशल श्रमिकों को खो देता है। 2000 में भारत पहला देश था जो प्रशिक्षित डॉक्टरों को विदेश भेज रहा था, जो देश के प्रशिक्षित डॉक्टरों कि कुल संख्या में से 57383 (9.9 प्रतिशत) संख्या थी। भारत ओर फिलीपींस सबसे अधिक विदेशी प्रशिक्षित डॉक्टरों ओर नर्सों को खासकर अंग्रेजी बोलने वाले देशों में भेजते हैं। स्वास्थ्य पेशेवरों के उत्प्रवासन का भारत पर नकारात्मक प्रभाव पडता है खास करके ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी डॉक्टरों का घनत्व बहुत कम है। भारत में डॉक्टरों का घनत्व 2004 में 0.6 प्रति हजार लोगों का है, जब कि अमेरिका में 3 और कनाडा में 2 हैं। अन्य बड़े मूल देशों के मुकाबले, भारत में डॉक्टरों की उच्च प्रवासीता दर (8 प्रतिशत) दर्ज की गई जबकि चीनी डॉक्टरों की प्रवासीता दर 1 प्रतिशत है। यह कोई प्रतिबंध नहीं है, किन्तु निश्चत रूप से भारत एक बड़े ओर शक्तिशाली आधुनिक स्वास्थ्य क्षेत्र है, जब कि अन्य देशों में स्वास्थ्य

पेशेवरों का प्रवास ओर एक गतिशील शहरी क्षेत्र एवं देश के स्तर पर चिकित्सा संसाधनों का असमान सामाजिक वितरण दोनों एक साथ होना चाहिए।

भारत से उच्चतर अध्ययन के लिए विदेश जाने वाले अधिकांश छात्र वापस नहीं आते हैं। विदेशी देशों के समृद्ध जीवन देखने के बाद वे अपने ही देश में सभी रुचि खो देते हैं। कई भारतीय विभिन्न विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा के अन्य संस्थानों में पढ़ रहे हैं। उनमें से कुछ काफी आकर्षक और उच्च पदों पर रखा गया है। विदेशी देशों में पढ़ने के उच्च स्तर का नेतृत्व करने का एक ओर आकर्षण है क्योंकि तकनीकी विशेषज्ञ और बुद्धिजीवियों वहां विशेष सुविधाएं प्रदान करते हैं। विदेशी देशों में इस बात का लाभ होता है कि एक व्यक्ति को सीखने के दौरान भी वह अपने जीवन के लिए कमाई कर सकता है। विदेशी देशों में स्टार्टअप पर्याप्त है। एक मितव्ययी भारतीय छात्र वहां अच्छी तरह रहता है और कुछ बचत करके घर भेज सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत में विशाल प्राकृतिक और मानव शक्ति संसाधन है। यदि इन दोनों संसाधनों को अधिकतम उपयोग में लाया जाए तो सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक प्रगति प्राप्त की जा सकती है। ये तकनीकी और अन्य प्रतिभाशाली संसाधनों जैसे हम प्रत्येक वर्ष खोते हैं, जो हमारे प्राकृतिक संसाधनों के विकास में वह बहुत मदद कर सकते हैं। विदेशों में रहने वाले भारत के इन प्रतिभाशाली पुत्रों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार को तेजी से कदम उठाने चाहिए। ये प्रतिभाशाली विशेषज्ञ दुनिया में भारत को एक महान शक्तिशाली देश बनाने में निश्चित रूप से मदद कर सकते हैं। इस संबंध में, लोगों को भी इस समस्या को सुलझाने में भारत सरकार के साथ आगे बढ़ना चाहिए और सहयोग करना चाहिए। छात्रों के माता-पिता को उन्हें विदेश जाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए और यहाँ तक कि अगर वे उच्च वेतन का भुगतान कर रहे हैं तो वहाँ स्थायित्व नहीं करें। वैज्ञानिक, डॉक्टर और इंजीनियर अपने मातृभूमि के लिए एक कर्तव्य बनता है। अपना देश आपके प्रशिक्षण पर भारी मात्रा में पैसा खर्च कर रहा है। इन लोगों को विदेशी राष्ट्रों की सेवा के द्वारा अपने देश को धोखा नहीं करना चाहिए। आज हजारों युवा भारतीय वैज्ञानिक और तकनीशियन हमारे देश के पुनःनिर्माण के लिए समर्पित हैं। देश पहले से ही परमाणु संबंधित स्थिति हाँसल कर चुका है और साथ ही एक अंतरिक्ष शक्ति बन गया है। विदेशों में रहने वाले यदि वे भारत लौट आए तो सभी भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के लिए पर्याप्त अवसर हैं। उन्हें अपने देश के भविष्य की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए और इस पवित्र कार्य में भाग लेने का सम्मान करना चाहिए।

3.2 प्रतीभा पलायन की समस्याके कारणों -

भारत में प्रतीभा पलायन के कई कारण हैं, जिसमें देश और व्यक्ति प्रमुख हैं। देशों के संदर्भ में सामाजिक वातावरण प्रमुख कारण हो सकता है। जिस में

Source Countries में - अवसरों की कमी, राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक असाद, स्वास्थ्य जोखिम आदि ।

Host Countries में - समृद्ध अवसर, राजनीतिक स्थिरता और स्वतंत्रता, विकसित अर्थव्यवस्था, बेहतर जीवन शैली आदि ।

व्यक्तिगत कारणों के संदर्भ में, पारिवारिक प्रभाव और व्यक्तिगत वरीयता, तलाश के लिए प्राथमिकता, बेहतर कैरियर की महत्वाकांक्षा आदि। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हम भारत में प्रतीभा

पलायन के कारणों की पहचान कर सकते हैं।

Other factors : Many of the social, economic and political factors also lead to migration. Political instability, red-tapeism, poverty, economic depression, political chaos, rising crime, crises and conflicts, corruption, family reasons, economic depression, low educational standards and inadequate infrastructure are some of the factors which create insecurity among the population that makes them leave their place of origin and migrate to better place. The host country, on the other hand, offers rich opportunities, political stability and freedom, a developed economy and better living conditions that attract talent. At the individual level, family influences, personal preferences, career ambitions and other motivating factors can be considered.

(1) भारत में उच्च शिक्षा का सिनेरियो -

2015-16 में भारत में उच्च शिक्षा के लिए 799 युनिवर्सिटी हैं। 39071 कॉलेज हैं और एनरोलमेन्ट संख्या 34584781 है जिस में पुरुष 18594723 और महिला 15990058 हैं। उच्च शिक्षा में प्रभावशाली वृद्धि ने अद्ययन, संसाधन, संस्थागत गुणवत्ता और मानकों की पर्याप्तता पर कुछ सवाल उठाए हैं। आज भारतीय श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए 100 प्रतिशत “कट ऑफ ” बन गया है। संस्थाए देश के सर्वश्रेष्ठ छात्रों को पाने की दौड़ में हैं, महत्वाकांक्षी युवा जो “ तर्क हीन ” मांगों को पूरा करने में विफल रहते हैं। उन्हें प्रतिष्ठित भारतीय विश्वविद्यालयों में किसी भी स्थान पर स्थान प्राप्त करने के अपने सपनों से सेमझौता करना पड़ता है। इससे उन्हें विदेशों में उच्च शिक्षा के दायरे का पता लगाने पड़ता है। कई छात्र उच्च शिक्षा के लिए विदेशों में अच्छे विश्वविद्यालयों में प्रवेश करने, अपनी किस्मत आजमाते हैं क्योंकि कौशल और ज्ञान के संदर्भ में वो अन्य देशों के छात्रों से आगे हैं। विदेश जाने वाले छात्र लगातार बढ़ रहे हैं। सबसे पसंदीदा शैक्षिक स्थलों में यू.एस और यू.के. हैं। यू.एस में पढ़ते वैश्विक छात्रों में प्रत्येक छठवाँ छात्र भारतीय है और मूल देशों में दूसरे स्थान पर भारत है। (तालिका - 1)

Table- 1 TOP FIVE PLACES OF ORIGIN IN U.S.

RANK	Place of Origin	2014/15	2015/16	% of Total	% Change
	World Total	974,926	1,043,839	100	7.1
1	China	304,040	328,547	31.5	8.1
2	India	132,888	165,918	15.9	24.9
3	Saudi Arabia	59,945	61,287	5.9	2.2
4	South Korea	63,710	61,007	5.8	-4.2
5	Canada	27,240	26,973	2.6	-1.0

Source - INDIA FAST FACTS 2015-2016

यू.एस. में पढ़ने वाले छात्रों में भारत एक गतिशील देश है जो 2014/15 में 132888 से 2015/16 में 165918 छात्र संख्या जो 24.9 प्रतिशत बढ़ा है। जिस में 36 प्रतिशत छात्र इंजिनियरिंग और 34.9 प्रतिशत छात्र मेथ्स और कम्प्यूटर सायंस में पढ़ते हैं। सबसे

लोकप्रिय विदेशी विश्वविद्यालयों में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, कोलंबिया विश्वविद्यालय, मिशिगन विश्वविद्यालय, टेक्सास विश्वविद्यालय, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, बोस्टन विश्वविद्यालय, पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, आदि।

यद्यपि यह युवा छात्रों का मामला है, अकादमिक रूप से अच्छी तरह से योग्य लोग उच्च शोध के लिए विदेश जाना पसंद करते हैं क्योंकि उन्हें भारत में अनुसंधान के लिए सर्वश्रेष्ठ मौके, संसाधन और सुविधा नहीं मिलती।

(2) विदेशों में बेहतर अवसर -

काम के बेहतर अवसरों और अच्छा वेतन पैकेज के लिए ज्यादातर छात्र मेजबान देश में रहना पसंद करते हैं। अच्छा वैश्विक प्रदर्शन प्राप्त करने और उच्च गुणवत्ता वाले जीवन एवं सुविधाओं के लिए शुरू करने के बाद छात्रों को घर वापस आने के लिए अनिच्छुक हो जाते हैं। वर्तमान समय में अधिकांश विकसित देशों ने संस्थानों की तरह कार्य किया है। जब वे अपने देश में अच्छे, प्रतिभाशाली और कुशल श्रमिकों को खोजने में नाकाम रहे, तब वे अन्य देशों के अत्यधिक कुशल और योग्य लोगों को आकर्षित करते हैं। कुशल भारतीय यू.एस. ग्रीन कार्ड और इ.यू. ब्लू कार्ड को ज्यादा पसंद करते हैं, बदले में भारत की तरह रहने की सामान्य स्थिति और आकर्षक पैकेज से समझौता करते हैं। विकसित देशों में, शोधकर्ताओं को अद्ययन जारी रखने के लिए धन और आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं, जो एक अन्य उद्देश्य हो सकता है जो इन अवसरों से वंचित लोगों को आकर्षित करता है। ज्ञान निर्माण के आंतरराष्ट्रीयकरण और अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के तेजी से विस्तार से भारत के पेशेवरों और कुशल श्रमिकों के लिए प्राप्त देशों के विविधीकरण को निर्धारित किया गया। वर्तमान में यूरोप, इटली, फ्रांस, जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों जैसे नए अंग्रेजी नहीं बोलनेवाले गंतव्यों में प्रवाह बढ़ा है। ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैंड में जाने वाले कुशल भारतीय प्रवासियों की संख्या भी बढ़ गई है।

(3) रोजगार -

भारत में कुशल और अर्धकुशल, नियुक्त और बेरोजगार मानव संसाधन हैं। कम वेतन और अकुशल कामकाजी परिस्थितियाँ ही पहल करवाता है, अन्य देशों के बेहतर जीवन स्तर और सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए। विकसित, विकासशील और अविकसित देशों के समूहों में वेतन के मामले में बहुत अंतर है। कुशल श्रमिकों को अपने श्रम के बदले में सुखदायक वेतन प्राप्त करना है लेकिन उनकी मातृभूमि में काम करने की स्थिति उनकी इच्छाओं को पूरा नहीं करती हैं। इसलिए उच्च मजदूरी और बेहतर रहने की स्थिति के लिए उन श्रमिक दूसरे देश को स्थानांतरित करना पसंद करते हैं।

(4) अनुकूल प्रवास नीतियाँ -

राष्ट्रों के बीच परस्पर आर्थिक निर्भरता बढ़ाना, ज्ञान अर्थव्यवस्था में कुशल श्रम की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए यूरोपीय संघ के लिए, युवा, शिक्षित और योग्य मानव शक्ति के मुख्य आपूर्तिकर्ता के रूप में भारत की स्थिति महत्वपूर्ण रही है। भारत अपनी जनसंख्या और अंग्रेजी बोलनेवाली आबादी के कारण, अत्यधिक कुशल श्रमिकों की ज्यादा संख्या के साथ, विकसित दुनिया के श्रमिकों की कमी वाली अर्थव्यवस्थाओं में आपूर्ति के

अंतराल को भरने के लिए एक सबसे प्रमुख देश के रूप में उभरा है। युरोपिय संघ के जनसंख्या और बुढ़ापे के प्रभावोंको ध्यान में रखते हुए आर्थिक उदेश्योकी पूर्ति के लिए, सदस्य देशो के दक्षिण एशिया के अत्यधिक कुशल पेशेवरों और तृतीयक स्तर के अंतर्राष्ट्र्य छात्रों को आकर्षित करने के उदेश्य से चयनात्मक आव्रजन नीतियाँ बनाई हैं। श्रम गतिशीलता की सुविधा के लिए, कुछ युरोपीयसंघ के देशों ने भारत के साथ श्रम-गतिशीलता साझेदारी पर हस्ताक्षर किए। प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय के मुताबिक, इस प्रकार के समझौतों पर कई देशों के साथ हस्ताक्षर किए गए हैं और अन्य के साथ बातचीत चल रही है।

भारत में ब्रेनड्रेन के कई कारण हैं, सबसे पहले बेरोजगारी की समस्या है। यहाँ तक कि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति को नौकरी नहीं मिल सकती। उच्च शोधकार्यों के लिए भारत में सुविधाओं की कमी है। भारत में उच्च नियुक्तियाँ काफी कम हैं। इस प्रकार प्रतिभाशाली विशेषज्ञ विदेशों में नए चराई तलाशना चाहते हैं।

3.3 भारत में प्रतीभा पलायन के सामाजिक-आर्थिक पहलु -

(1) भारत नए ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में प्रतिभा संग्रह (Brain Reservoir) -

ज्ञान की गहन गतिविधियों में वृद्धि ने विकसित देशों में विज्ञान और इंजीनियरिंग पेशेवरों की बढ़ती मांग को जन्म दिया है। इन डोमेन में प्रशिक्षित लोगों के एक महत्वपूर्ण रिजर्व के साथ, भारत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के लिए मानव पूंजी का प्रमुख सप्लायर बन रहा है। भारत अन्य महत्वपूर्ण मूल देशों की तुलना में इन विशेषज्ञों की बड़ी संख्या भेज रहा है। एक उदाहरण है कि अमेरिकी ग्रेजुएट डिग्री कार्यक्रमों में विज्ञान और इंजीनियरिंग के विदेशी छात्रों में भारत, चीन और दक्षिण कोरिया के हैं। यू.एस. में, 2015-16 में, मूल देशों में, भारत के 101,850 विदेशी छात्रों की संख्या से दूसरे नंबर पर है और चीन 123,250, साउथ कोरिया 16,613, साउदी अरब 13,210, कनेडा 10,220 संख्या है। 2015-16 में, यू.एस. के विश्वविद्यालयों में नामांकित विदेशी छात्रों की संख्या 1,043,839 है, जो 7.1 प्रतिशत बढ़ी है। यू.एस. के सभी उच्च शिक्षा छात्रों में 5.2 प्रतिशत आंतरराष्ट्र्य छात्र हैं। यू.एस. में 9/11 एटेक के बाद एफ-1 वीसा स्टेटस सुरक्षा के लिए जरूरी हैं और रोजगार का परवाना भी है। मेजबान देशों में उत्कृष्ट और उच्चतम कमाई वाले समूहों में भारतीय प्रवासियों का एक समूह है। जर्मनी भी भारत के इंजीनियरिंग और कंप्यूटर विज्ञान के विदेशी छात्रों के रूप में भर्ती कर रहा है। 2014 में जर्मनी में 7 प्रतिशत विदेशी छात्रों की संख्या बढ़ी है। 2015 में भारत से 25 प्रतिशत का बढ़ावा हुआ है। जर्मनी में Low tuition fees, English-taught master's programs and improved post-study work right + eased pathway to residency for highly skilled foreign students all helping का लाभ है।

ओबामा सरकार ने पहले 2010 में और उसके बाद 2016 में एच-1बी वीजा की फीस में भारी बढ़ोतरी की थी। बीते साल जनवरी में इस फीस को 2000 से बढ़ाकर 6000 डॉलर कर दिया गया था। इस पर भारत सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया जताई थी। **भारतीयों का दबदबा** : अमेरिका उच्च कौशल प्राप्त कर्मियों को अपने यहां काम करने का मौका देने के लिए सालाना 85 हजार एच-1बी वीजा जारी करता है। यह पूरी दुनिया के लिए होता है, लेकिन इसमें भारतीयों का दबदबा है। इसका 60 प्रतिशत से अधिक भारतीयों को मिलता है। इसका कारण उनकी कुशलता और अपेक्षाकृत कम वेतन पर काम करना है। 2015 यूएसआईसीए रिपोर्ट के मुताबिक कंप्यूटर क्षेत्र 86.5 फीसदी भारतीयों को, 5.1 फीसदी चीनी नागरिकों को

0.8 फीसदी कनाडा निवासियों को, 7.6 फीसदी अन्य देशों के नागरिकों को एच 1 बी वीजा मिलता है, वहीं अगर इंजीनियरिंग क्षेत्र की बात करें तो यहां 46.5 फीसदी भारतीय, 19.3 फीसदी चीनी, 3.4 फीसदी कनाडाई, 30.8 फीसदी अन्य एच 1 बी वीजा मिला है। एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में इंफोसिस के कुल कर्मचारियों में 60 फीसदी से ज्यादा एच 1बी वीजा धारक हैं। इसके अलावा वाशिंगटन और न्यूयॉर्क में एच-1बी वीजा धारकों में करीब 70 प्रतिशत भारतीय हैं। आंकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि यदि अमेरिका में एच-1बी वीजा दिए जाने के नियमों में कोई बदलाव किया गया तो इससे सबसे ज्यादा भारतीय इंजीनियर और भारतीय कंपनियां प्रभावित होंगी। साथ ही इसका बुरा प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा। भारतीय जीडीपी में भारतीय आईटी कंपनियों का योगदान 9.5 प्रतिशत के करीब है और इन कंपनियों पर पड़ने वाला कोई भी फर्क सीधे तौर पर अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा। क्या बदला नए कानून के बाद- **घटी भारतीय छात्रों की संख्या** : घृणा अपराधों की विभिन्न घटनाओं और ट्रंप प्रशासन की वीजा नीतियों में संभावित बदलावों को लेकर फैले डर और चिंता के चलते अमेरिकी विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों के आवेदनों की संख्या में तेज कमी देखी गई है। इसका सबसे बड़ा असर भारतीय आईटी कंपनियों पर पड़ेगा। कैलिफोर्निया के सांसद जोए लोफग्रेन ने 'हाई स्किल्ड इंटिग्रिटी एंड फेयरनेस एक्ट 2017' (उच्च कुशल निष्ठा एवं निष्पक्षता अधिनियम 2017) विधेयक पेश किया। इस विधेयक के मुताबिक एच-1बी वीजा पर बुलाए जाने वाले पेशेवर को 1.30 लाख डॉलर से अधिक के वेतन पर ही नियुक्त किया जाएगा। वर्तमान में ऐसे वीजाधारक के न्यूनतम वेतन की सीमा 60 हजार डॉलर है।

युरोपीय संघ में , यूके उच्च कुशल भारतीय प्रवासीयों का पहला गंतव्य है, जो पश्चिमी युरोप में भारतीयों की कुल संख्या का दो तिहाई हिस्सा लेता है।

(2) भारतीय छात्रो : विकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए श्रम का एक महत्वपूर्ण स्रोत -

भारतीय छात्रो ने अच्छी तरह प्रशिक्षित भारतीय प्रवासियों के प्रवाह में एक महत्वपूर्ण स्थान ले लिया है। अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय स्टूडेंट्स रजिस्ट्रेशन में भारत और चीन के छात्रों की हिस्सेदारी 47 प्रतिशत की है। अमेरिका में पढ़ने वाले भारतीय और चीनी छात्रों की संख्या लगभग पांच लाख है। यू.एस. में अंतिम दशक में भारी भदलाव आये है, Sending Countries में परिवर्तन देखा जाता है। तालिका - 2 में आंतरराष्ट्रिय छात्रों की यू.एस की ओर गतिशीलता दर्शाई है। भारतीय छात्रो ने भरी 2006 से 2015 की उडान को दर्शाती है, जो यू.एस के लिए श्रम का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

तालिका - 2 आंतरराष्ट्रिय छात्रों की यू.एस की ओर गतिशीलता

Place of Origin	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015
World Total	564,766	582,984	623,805	671,616	690,923	723,277	764,495	819,644	886,052	974,926
China	62,582	67,723	81,127	98,235	127,628	157,558	194,029	235,597	274,439	304,040
India	76,503	83,833	94,563	103,260	104,897	103,895	100,270	96,754	102,673	132,888

South korea	59,022	62,392	69,124	75,065	72,153	73,351	72,295	70,627	68,047	63,710
----------------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------

Source - 2016 ITA Education Top Markets Report Page No. 6

2009 में, चीन देश-विदेशों में छात्रों की सबसे बड़ी संख्या (421,100) भेजता था और भारत दूसरे नंबर पर 153,300 छात्रों विदेशों में भेजे थे। यूरोपीय संघ-27 ने तृतीयक शिक्षा में 16 मिलियन विदेशी छात्रों की मेजबानी की जिसमें 1353930 भारतीय नागरिक थे। पहला गंतव्य ब्रिटेन (42406) था, उसके बाद जर्मनी (3629), साइप्रस (1588) और फ्रांस (1252) था। 2014 में भारत के छात्रों ने उच्च अभ्यास में प्रमुख 7 देशों में नामांकन किया जिसमें यू.एस(132888), कनाडा (37399), ऑस्ट्रेलिया(26433), यू.के. (21000), चीन(13578) और जर्मनी(9495) था।

(3) अनुकूल नीतियों के कारण यूरोपीय संघ में भारतीय प्रवासियों के आव्रजन में वृद्धि -

उच्च कुशल व्यक्तियों के लिए अधिक अनुकूल आव्रजन स्थितियों का निर्धारण यूरोप में भारतीय आव्रजन प्रवाह में मजबूत उपस्थिति ही निर्धारित करता है। यूरोप में वर्तमान भारतीय गतिशीलता मुख्य रूप से आईटी, चिकित्सा, वित्त, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में छात्रों और कुशल श्रमिकों का एक गमनागमन है। रोजगार और शिक्षा के उच्च कुशलों की प्रबलता का पता यूरोपिय देशों द्वारा भारतीय नागरिकों को दी जाने वाली उच्च स्तर की निवास परमिट से पता चलता है। यूरोपिय संघ ने 201,398 भारतीय नागरिकों को नये परमिट जारी किए गए जिसमें से 37 प्रतिशत रोजगार के लिए थे और 26 प्रतिशत शिक्षा के उद्देश्य के लिए थी। 2008 के मुकाबले 2009 में इमिग्रेशन के प्रवाह में 21 प्रतिशत की कमी आई थी। भारतीय आव्रजन में 16 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई जो 108,341 तक पहुंच गई, जो सभी गैर-यूरोपीय संघ के नागरिकों के 6 प्रतिशत के करीब है। हाल ही के वर्षों में भारत-यूरोपीय संघ प्रवासन प्रवृत्ति, न केवल एक क्रमिक विस्तार को दर्शाता है, बल्कि प्रवाह और उनके गंतव्यों के स्रोत के संदर्भ में परिवर्तन भी हैं। यूरोप में भारतीय प्रवासन अकुशल और कुशल प्रवासियों का एक वर्तमान कार्य है, जो कुशल पेशेवरों के बढ़ते तत्वों के साथ है जो यूरोपीय संघ के आव्रजन नीतियों के कारण कुशल प्रवासियों पर ध्यान केन्द्रित है।

(4) यूरोपीय संघ के लिए भारत, यूवा ओर उच्च प्रशिक्षित श्रमिकों का आपूर्ति कर्ता देश है -

ज्ञान अर्थव्यवस्था में कुशल श्रम की बढ़ती मांग को देखते हुए, यूरोपीय संघ के लिए भारत, यूवा ओर उच्च प्रशिक्षित श्रमिकों का आपूर्ति कर्ता देश है। अपने जनसांख्यिकीय प्रोफाइल और इसकी अंग्रेजी बोलने वाली आबादी के कारण, भारत उच्च कुशल श्रमिकों के अपने संग्रह के साथ, विकसित दुनिया के श्रमिकों की कमी वाली अर्थव्यवस्थाओं में आपूर्ति के अंतराल को भरने के लिए एक सबसे प्रमुख देश के रूप में उभरा है। अमेरिकी ग्रीन कार्ड के सिद्धांतों के अनुगामी, यूरोपीय ब्लू कार्ड के माध्यम से, यूरोपीय संघ का इरादा अगले 20 वर्षों में 20 मिलियन उच्च प्रशिक्षित श्रमिकों को आकर्षित करने का है। इसके अलावा यूरोपीय संघ और भारत के बीच 2007 में मुक्त व्यापार समझौते के जरीए उच्च कुशल भारतीयों को यूरोपीय संघ के लिए आव्रजन करने में सरलता रहेगी। भारत 1.25 बिलियन की एक बड़ी और बढ़ती आबादी के साथ अंतर्राष्ट्रीय प्रवास में एक प्रमुख खिलाड़ी होगा।

(5) प्रतिभा पलायन विरुद्ध प्रतिभा लाभ -

माइग्रेशन कि जागरूकता बढ़ती जा रही हैं, वह Sending Country और Receiving Country दोनों को लाभान्वित कर सकता है। भारत के बारे में सोचे तो लंबे समय में ब्रेन-ड्रैन को ब्रेन-गेप में बदला जा सकता है। वर्तमान समय में विदेशों में भारतीय समुदाय की भूमिका केवल वित्तीय संसाधनों से गृहभूमि के विकास से संबंधित है। अनुमानित 189 देशों में बसे 30 मिलियन भारतीय डायस्पोरा लगभग 400 अरब डॉलर की वार्षिक आर्थिक आय का उत्पादन करता है, जो भारत का जीडीपी 27 का लगभग 30 प्रतिशत है। संयुक्त राज्य अमेरिका में 1 मिलियन भारतीय जो भारत की आबादी के केवल 0.1 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह भारत की राष्ट्रीय आय के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर कमाते हैं। (रवीश,2013) अनुमानित है की 2010 में जो रेमिटन्स प्राप्त हुए, वह जीडीपी के हिस्से के रूप में 55 अरब डोलर या 3.9 प्रतिशत था। स्वाभाविक रूप से इन वित्तीय संसाधनों ने भारत में विकास प्रक्रियाओं में योगदान दिया। विदेश में बसे भारतीय विदेशियों, विशेष रूप से उच्च योग्यता वाले प्रवासी जो प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ के अलावा अन्य लाभ ले सकते हैं, जैसे देश कि छबि सुधारना, व्यापार नेटवर्क और नए बाजारों तक पहुंच बढ़ाना, ज्ञान हस्तांतरण करना आदि है।

4. निष्कर्ष -

प्रतियोगिता के इस आलम में लोग मूल्यों से ज्यादा तरजीह भौतिकता को दे रहे हैं। लोगों की मानसिकता में आए इस बदलाव के कारण हमारे सामाजिक व जीवन मूल्यों में भी रेखांकित करने योग्य बदलाव आ रहा है जिस कारण समाज में गमनागमन भी बढ़ रहा है। दूर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि समाज में केवल अंधा अनुकरण बढ़ रहा है। विश्व में शक्ति के संतुलन और अस्थिर विकास के लिए प्रतिभा पलायन की घटना को रोकना बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक विशेष देश को अपने विकास और प्रसार के लिए अपने सभी स्थानीय कुशल नागरिकों का उपयोग करने में मदद करेगा। लेकिन अपने निवासी स्थानों पर इन कुशल श्रमिकों को पकड़ रखने के लिये, उन्हें पर्याप्त कार्य अवसर और रहने की सुविधा प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है। ताकि इस पृथ्वी के प्रत्येक इन्सान के जीवन के अच्छे स्तर हो सकते हैं और प्रत्येक देश एक विकसित राष्ट्र के रूप में खुद को पेश कर सकता है। यूएनडीपी का अनुमान है कि यू.एस. को कम्प्यूटर विशेषज्ञों के उत्प्रवास की वजह से भारत को 2 अरब डॉलर का नुकसान आता है। एक सवाल उठता है की क्या हमें कोई किसी भी प्रकार का नुकसान देंगे तो हमें अच्छा लगता है ? नहीं.....न....। क्या देश का नुकसान अपना नहीं होता ? अपने उच्च अध्ययन के लिये विदेश जाने वाले भारतीय छात्र भारत के 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर विदेशी मुद्रा का वार्षिक विनिमय करतें है। ये आंकड़े स्पष्ट रूप से भारत देशकी शान बढ़ाने के लिये हैं। सरकार कोई बेन लगाए ऐसी केई उमिद नहीं है मगर हमारा कर्तव्य जरूर है। इस सिनेरियो को भारत के सतत विकास के लिए बदलना जरूरी हैं। प्रतिभा ही देश का विकास है, हमारा विकास हैं।

सुझाव -

भारत में शक्ति के संतुलन और अस्थिर विकास के लिए प्रतिभा पलायन की घटना को रोकना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि देश के कर मे आर्थिक नुकसान, भावि उद्योग साहसिकों और गतिशीलता पर असर, उच्च कोशल श्रमिकों की कमी, शैक्षिक कुशल व्यक्तियों

की कमी, शिक्षा सर्विस का नुकसान, नए विचार और ईनोवेशन की कमी इस प्रकार नुकसान ज्यादा है। इसलिए सरकार को प्रतिभा पलायन के रेशियों को कम करना पडोगा। इसके लिए सरकार को विदेशों की तरह पैकेज और सुविधाए बढ़ाना आवश्यक है, उच्च शिक्षा पद्धतियों में बदलाव भी जरूरी है, देश के युवाओं के लिए ज्यादा से ज्यादा सुनहरे अवसरों का सर्जन करना बहुत महत्वपूर्ण है। इन सबके लिए देश को प्रतिभा की जरूरत हैं।

संदर्भ सूची -

- 1 जानी बलवंत (2014) ब्रिटिश गुजराती डायस्पोरा निबंध धारा, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद
- 2 शेट प्रवीण (2008) भारतीय डायस्पोरा, अर्थात्, सी.एस.एस., ग्रंथ-27, अंक-1,2, पे.64-71, सुरत
- 3 Chaudharu Bhaskar (2012) Mobility and Brain Drain in Higher Education in India, International Journal of Social Science & Inter Disciplinary Research, vol-1, Issue 12.
- 4 Gribble Cate & Tran Ly (2016) International Trends in Learning Abroad, IEAA, Uni. Australia
- 5 EUROSTAT International Migration Database.
- 6 Iravani Mohammad (2011) Brain Drain Problem : A Review, International Journal of Business & Social Science, Vol.2, No.15, p.p.284-289, 2011.
- 7 International Migration Report 2017, United Nations.
- 8 India Fast Facts-2015/16, open doors Report.
- 9 ITA Education Top Markets Report, 2016, U.S. Department of Commerce.
- 10 Jayaram (2004) The Indian Diaspora: Dynamics and Migration, Indian Sociological Society, Sage Publication India Pvt.Ltd., New Delhi.
- 11 Khadria Binod (2002) Skilled Labor Migration From Developing Countries : Study on India, International Migration Programme, Geneva.
- 12 Kim Knott & Sean McLoughlin (Eds.) (2011) Diasporas, Rawat Publication, Jaipur
- 13 Madhurima Nundy (2016) Indian Students in Higher Education Abroad : The Case of Medical Education in China, Institute of Chinese studies, No.40, Delhi.
- 14 OECD Statistics – International Migration database.
- 15 Raveesh (2013) Brain Drain : Socio-Economic Impact on Indian Society, International Journal of Humanities & Social Science Invention, Volume-2, Issue-5, p.p. 12-17,
- 16 Soni Jeetendra (2006) Brain Drain to Brain Circulation: In Indian Context, JNU, New Delhi.
- 17 Varma Roli & Kapur Deepak (2013) Comparative Analysis of Brain Drain, Brain Circulation and Brain Retain : A Case Study of Indian Institutes of technology, Journal of Comparative Policy Analysis, Vol-15, No.4, p.p. 315-330.
- 18 Vipin Kumar & Oth. (2014) Analysis of Indian's Manpower Resource With respect to Migration Aspect of Resources and Comparative Capabilities, CSIR-NISTADS, New Delhi.
- 19 [http:// stats.uis.unesco.org](http://stats.uis.unesco.org) 20 [http:// indiandiaspora.nic.in](http://indiandiaspora.nic.in) 21 www.trade.gov/topmarkets.